वाह उस्ताद !!! / ब्रज किशोर

चाय चाय
चैये-चैये
चइये कि नई चइये
छप्पन छुरी
छप्पन इंच
छप्पन भोग
जीरो बैलेंस खाता
पंद्रह लाख खाता
दो करोड़ सालाना
मेक इन इंडिया
फेंक इन इंडिया
स्टार्ट अप फुस्स
स्किल बनाम विकास
मुद्रा संग विमुद्री
कालामन खुश
नीरव पीये एनपीए
माल्या माल लेग्या
मेहुल भाया रामलुभाया
बेसुध प्रहरी
राफेल में फेल
राम भजो
दाम भांजो
फकीर का चोला
लीक इन झोला
दाढ़ी में मनका
हाथ में तिनका
ताली में खनक
थाली में पिनक
धिनक धिनक
ता ता थाया
बैनों भाया
जीएसटी का तड़का
आधार अंग फड़का
अंग अंग कड़का
बोल जमूरे!
अगले शो के लिए तैयार है ?
दर्शक बेकरार हैं ?
हां उस्ताद ! वाह उस्ताद !!

एक होमवर्क ऐसा भी.....

मुकेश भार्गव

चेन्नई के एक स्कूल ने अपने बच्चों को छुट्टियों का जो एसाइनमेंट दिया वो पूरी दुनिया में वायरल हो रहा है। वजह बस इतनी कि उसे बेहद सोच समझकर बनाया गया है। इसे पढ़कर अहसास होता है कि हम वास्तव में कहां आ पहुंचे हैं और अपने बच्चों को क्या दे रहे हैं। अन्नाई वायलेट मैट्रीकुलेशन एंड हायर सेकेंडरी स्कूल ने बच्चों के लिए नहीं बल्कि पेरेंट्स के लिए होमवर्क दिया है, जिसे हर एक पेरेंट को पढ़ना चाहिए।

उन्होंने लिखा-

पिछले 10 महीने आपके बच्चों की देखभाल करने में हमें अच्छा लगा।आपने गौर किया होगा कि उन्हें स्कूल आना बहुत अच्छा लगता है। अगले दो महीने उनके प्राकृतिक संरक्षक यानी आप उनके साथ छुट्टियां बिताएंगे। हम आपको कुछ टिप्स दे रहे हैं जिससे ये समय उनके लिए उपयोगी और खुशनुमा साबित हो।

- अपने बच्चों के साथ कम से कम दो बार खाना जरूर खाएं। उन्हें किसानों के महत्व और उनके कठिन परिश्रम के बारे में बताएं। और उन्हें बताएं कि उपना खाना बेकार न करें।

- खाने के बाद उन्हें अपनी प्लेटें खुद धोने दें। इस तरह के कामों से बच्चे मेहनत की कीमत समझेंगे।

- उन्हें अपने साथ खाना बनाने में मदद करने दें। उन्हें उनके लिए सब्जी या फिर सलाद बनाने दें।

अगर आप माता-पिता हैं तो इसे पढ़कर आपकी आंखें नम जरूर हुई होंगी। और आखें अगर नम हैं तो वजह साफ है कि आपके बच्चे वास्तव में इन सब चीजों से दूर हैं। इस एसाइनमेंट में लिखा एक-एक शब्द ये बता रहा है कि जब हम छोटे थे तो ये सब बातें हमारी जीवनशैली का हिस्सा थीं, जिसके साथ हम बड़े हुए हैं, लेकिन आज हमारे ही बच्चे इन सब चीजों से दूर हैं, जिसकी वजह हम खुद हैं।।

- तीन पड़ोसियों के घर जाएं। उनके बारे में और जानें और घनिष्ठता बढ़ाएं।

- दादा-दादी/ नाना-नानी के घर जाएं और उन्हें बच्चों के साथ घुलने मिलने दें। उनका प्यार और भावनात्मक सहारा आपके बच्चों के लिए बहुत जरूरी है। उनके साथ तस्वीरें लें।

- उन्हें अपने काम करने की जगह पर लेकर जाएं जिससे वो समझ सकें कि आप परिवार के लिए कितनी मेहनत करते हैं।

- किसी भी स्थानीय त्योहार या स्थानीय बाजार को मिस न करें।

- अपने बच्चों को किचन गार्डन बनाने के लिए बीज बोने के लिए प्रेरित करें। पेड़ पौधों के बारे में जानकारी होना भी आपके बच्चे के विकास के लिए जरूरी है।

- अपने बचपन और अपने परिवार के इतिहास के बारे में बच्चों को बताएं।

- अपने बच्चों का बाहर जाकर खेलने दें, चोट लगने दें, गंदा होने दें। कभी कभार गिरना और दर्द सहना उनके लिए अच्छा है। सोफे के कुशन जैसी आराम की जिंदगी आपके बच्चों को आलसी बना देगी।

- उन्हें कोई पालतू जावनर जैसे कुत्ता, बिल्ली, चिड़िया या मछली पालने दें।

- उन्हें कुछ लोक गीत सुनाएं।

- अपने बच्चों के लिए रंग बिरंगी तस्वीरों वाली कुछ कहानी की किताबें लेकर आएं।

- अपने बच्चों को टीवी, मोबाइल फोन, कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूर रखें। इन सबके लिए तो उनका पूरा जीवन पड़ा है।

- उन्हें चॉकलेट्स, जैली, क्रीम केक, चिप्स, गैस वाले पेय पदार्थ और पफ्स जैसे बेकरी प्रोडक्ट्स और समोसे जैसे तले हुए खाद्य पदार्थ देने से बचें।

- अपने बच्चों की आंखों में देखें और ईश्वर को धन्यवाद दें कि उन्होंने इतना अच्छा तोहफा आपको दिया। अब से आने वाले कुछ सालों में वो नई ऊंचाइयों पर होंगे।

माता-पिता होने के नाते ये जरूरी है कि आप अपना समय बच्चों को दें।

अगर आप माता-पिता हैं तो इसे पढ़कर आपकी आंखें नम जरूर हुई होंगी। और आखें अगर नम हैं तो वजह साफ है कि आपके बच्चे वास्तव में इन सब चीजों से दूर हैं। इस एसाइनमेंट में लिखा एक-एक शब्द ये बता रहा है कि जब हम छोटे थे तो ये सब बातें हमारी जीवनशैली का हिस्सा थीं, जिसके साथ हम बड़े हुए हैं, लेकिन आज हमारे ही बच्चे इन सब चीजों से दूर हैं, जिसकी वजह हम खुद हैं।।

अगर आप बेरोजगार हैं ।।।।।

अजीत अंजुम

अब तक पान की दुकान खोलकर लाखों नहीं कमा पाए हैं , दूध बेचकर दस लखिया बैंक बैलेंस नहीं बना पाए हैं , पकौड़े बेचने का ठीहा नहीं लगा पाए हैं , मां -बाप की तरफ से धकियाये जाने के बाद भी पढ़ने में आपकी कभी कोई दिलचस्पी पैदा न हो पाई हो , गली - मोहल्ला -समाज आपको आवारा या नकारा समझता हो , परिवार आपको नालायक घोषित कर चुका हो , अगर आप बीए - एमए पास करके भी कोई रोजगार न पा सके हों , तो आपके लिए देशव्यापी 'स्वर्णिम स्वरोजगार योजना' में किस्मत आजमाने का सुनहरा मौका है । इस रोजगार का सृजन हर भाषा -भाषी के लिए किया गया है और इसके दायरे का लगातार विस्तार किया जा रहा है, लिहाजा स्कोप की कमी नहीं है ।

'स्वर्णिम स्वरोजगार योजना ' के लिए किसी रोजगार कार्यालय के धक्के खाने की जरुरत नहीं है । किसी तरह के इम्तिहान से दो -दो हाथ करने का लोड नहीं लेना है। यहां लोड लेने का नहीं , लोड देने का है।

इम्तिहान और इंटरव्यू से पहले वाली किसी किताबी पढ़ाई की तो बिल्कुल जरुरत नहीं है।

बाकी रोजगार योजनाओं की तरह 'स्वर्णिम स्वरोजगार योजना' का हिस्सा बनने के लिए फिलहाल कोई तारीख भी तय नहीं है ।

मतलब डेट के लैप्स करने का कोई टेंशन नहीं है ।

'स्वर्णिम स्वरोजगार योजना' में टेंशन लेने नहीं , टेंशन देने और अटेंशन लेने का है।

बस, इसके लिए आपको पात्रता अर्जित करनी होगी ।

' स्वर्णिम स्वरोजगार योजना' के कायदे और फायदे बताऊंगा जल्दी ही, चार्टर बना रहा हूँ अभी।

तब तक आप अपने भीतर '2014 के बाद वाली देशभक्ति' की आंच को सुलगाने की कोशिश करें । सुलग जाए तो उसे सीधे हाई पर ले जाएं । फिर उसपर मुसलमानों से नफरत की हांडी चढ़ाएं । उसमें सावरकर और गोडसे छाप मसाले डालकर 'जिन्ना बिरयानी' बनाना शुरु करें । पकने और जलने के बीच हाई , सिम और मीडियम करते रहें । गैस कम होने या खत्म होने की चिंता न करें , सप्लाई पीछे की पाइपलाइनसे आ रही है । 'स्वर्णिम स्वरोजगार योजना' के तहत घर -घर युवा और हर -हर युवा को ऐसा ही चूल्हा दिया जाता है , जिसमें गैस की सप्लाई अनवरत जारी रहती है । सिर्फ माचिस और तीली का जुगाड़ कई बार स्थानीय स्तर पर करना पड़ता है , जो उम्मीद है आप कर लेंगे ।

समस्याओं की जड़ है हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली

भारत आज प्रगति के पथ पर अग्रसर है। भारत में सूचना का अधिकार व शिक्षा का अधिकार जैसे विधेयक लागू किये जा रहे हैं। जितनी नौकरियों की आवश्यकता है, उससे अधिक ही नौजवान डिग्रियाँ लेकर बेरोज़गार घूमते हैं। उनमें नौकरी के लिए जो दक्षता, निपुणता तथा कार्यकुशलता होनी चाहिए, वह उनके पास नहीं होती है, यह समस्या भी देश के सामने विकराल रूप धारण किए हुए खड़ी है।

वहीं आज का नौजवान नैतिक नियमों का उल्लंघन करना, कतार तोड़ना, पर्यावरण की अवहेलना करना अपनी शान समझता है। यह देश अगर धर्म भूमि है तो यहाँ भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी क्यों हैं और यदि पूरे ज्ञान का स्रोत भारत से ही निकलता है तो यहाँ पर इतनी गहरी क्यों हैं और यदि पूरे ज्ञान का स्रोत भारत से ही निकलता है तो यहाँ पर 37 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा के नीचे क्यो जीवन व्यतीत कर रहे हैं ? वर्षों के शोध के बाद यह पाया गया कि इन सभी समस्याओं की जड़ हमारे देश की दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है।

यहाँ बच्चों को सिखाने नहीं पढ़ने भेजा जाता है और अध्यापक भी पढ़ाने आते हैं न कि सिखाने। अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चों के अच्छे अंक आएं और एडमिशन एक अच्छे संस्थान में हो जाए और वे जीवन में अच्छे पैसे कमाएँ। जीवन रूपी रथ के दो पहिए होते हैं। जीवन की दिन-प्रतिदिन की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए धन की आवश्यकता होती है और सुखी जीवन जीने के लिए ज्ञान, व्यवहार, चरित्र एवं धैर्य की आवश्यकता होती है।

देश के सभी विद्यालय शिक्षा प्रणाली की स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करें, सभी एक स्वस्थ, संपन्न और निर्भय समाज की स्थापना हो सकेगी।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल